प्र.- निराला जी का काव्यात्मक परिचय व संध्या सुन्दरी का भावार्थ।

उत्तर- हिन्दी कविता कामिनि को छन्दों के बंधन से मुक्ति दिलाने और विविध स्वर तथा रागों की सुसज्जता देने वाले कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' मुख्य रूप से ओज और पौरुष के कवि रहे हैं। प्रकृति, सृष्टि और सौन्दर्य को निराला जी भी अपने काव्य में यथेष्ट महत्व दिया है, पर साथ ही सामाजिक स्तर पर उत्पन्न मानवीय समस्याएँ भी उन्हें आंदोलित करती रही है।

निराला की पहली प्रकाशित कविता 'जूही की कली' है जिसकी रचना सन् 1916 ई० के ही आस-पास हुई थी। यानी जब छायावाद का आरंभ भी नहीं हुआ था तभी उन्होंने अपने प्रयोग की नवीनता का एक नमूना प्रस्तुत कर दिया था। उस कविता की पहली विशेषता छंद के बंधन से पूर्णतः मुक्ति है और दूसरी है पौरुष भाव का पूर्ण प्रतिपादन।

निराला ओज और पौरुष के कवि हैं। शायद यही कारण है कि उनके जैसी करुणा भी किसी अन्य छायावादी कवि के काव्य में नहीं मिलती है। प्रसाद जी की करुणा अंतर्मुखी थी जो आँसू के रूप में व्यक्त होती थी, पर निराला की करुणा बहिर्मुखी होने के चलते प्रायः आक्रोश के रूप में व्यक्त होती थी।

निराला के काव्य में पवन-पुत्र हनुमान, जाम्बवान या राम जो भी पुरुष पात्र हैं वे पूर्णतः पौरुष से युक्त हैं उनके संवादों और

उनकी ~~भाषा भी~~ भाषा में भी पर्याप्त ओज है। कवि के भी अपने वर्णन-चित्रण या संवादों में यह पौरुष और ओज छिप नहीं पाता। निराला के ओज गुण की विशेषता यह है कि वह शब्दों के साथ ही भावों में भरा हुआ है। इस दृष्टि से उनकी कविताओं में 'बादल राग', 'राम की शक्ति पूजा', 'भारती वन्दना', 'जागो फिर एक बार', 'आवाहन' आदि कविताओं का विशेष महत्व है।

ओज-गुण मूलतः वीरता मूलक गुण होता है जिससे चित्त में उत्साह भरता है और दीप्ति तथा स्फीति आती है। निराला की कविता 'बादलराग' की आरंभिक पंक्तियों में ही इसका पूर्ण परिचय मिल जाता है—

"झूम-झूम मृदु गरज-गरज घनघोर।
राग-अमर! मैं अम्बर में भर निज रोर।"

'रामशक्ति की शक्ति पूजा' जैसी प्रबन्धात्मक कविता हो या 'भारती-वन्दना' अथवा 'सरस्वती बन्दना' जैसी गीत, उनमें बिम्ब-विधान की विशिष्टता ध्यान आकर्षित कर ही लेता है ~~यहाँ तक की कि~~ सामाजिक ~~विष~~ विषमताओं से प्रेरित तथा क्षुब्ध होकर लिखी कविताओं में भी उनकी इस विशेषता के सहज दर्शन हो जाते हैं। 'वह तोड़ती पत्थर' का एक बिम्ब है—

'श्याम तन भर बँधा यौवन।
नत नयन प्रिय कर्म रत मन।'

भिक्षुक में भी—

"पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक।
मुट्ठी भर दाने को।

मुक्त निराला की

मुझे पहली पुस्तक होती कविता। जैसे निराला के काव्य में छायावादी और रहस्यात्मक कविताओं की भी भरमार है पर प्रत्यक्ष प्रकृति, स्थूल या दैनिक या समाज तथा मूर्त पात्रों अथवा दीन सर्वहारा के चित्रण में उन्हें विशेष सफलता मिली है।

हिन्दी कविता में प्रगतिशील धारा का विधिवत आरंभ सन् 1936 ई. में आयोजित हुआ, पर उसके काफी पूर्व ही निराला की चेतना उसे छायावाद का अंत बना चुकी थी। निश्चय ही तोड़ती पत्थर या विधवा छायावादी कविताएँ हैं, पर वस्तु के स्तर पर इनकी वास्तविक सफल कोई अन्य प्रगतिशील कविता नहीं मिलती गयी।

'संध्या सुन्दरी' एक प्रकृति काव्य है। प्रकृति के अमूर्त पक्ष को भी चित्रण का विषय बनाने की जो एक नयी परिपाटी छायावाद काल में आरंभ हुई थी, यह कविता उसका एक अच्छा उदाहरण है।

कवि संध्या को एक सुन्दरी मान रहा है। यह रूपक है। फिर काव्य में मानवीकरण की योजना करते हुए कवि कहता है कि संध्या सुन्दरी दिन की समाप्ति में धीरे धीरे आसमान से धीरे धीरे उतर रही है। आरंभ की पंक्तियों में संध्या की सुन्दरता सूक्ष्मता और शांति की सूचना मिल जाती है। उपमान 'परी' उसकी अलौकिकता का परिचायक है। कवि सघन वातावरण को उसकी अलौकिकता का परिचायक है। कवि संध्या वातावरण को संध्या सुन्दरी की आँचल तथा

तथा दिन और रात की मिलन (संधि) की बेला को उसके दोनों होठ मान रहा है, क्योंकि दोनों वही लालिमा से दीप्त है। यहाँ होठ होने का अर्थ पृथ्वी और आकाश के संधि-स्थल से भी जोड़ा जा सकता है। अंधकार-युक्त हो रहे आकाश को संध्या-सुन्दरी की केश राशि के रूप में चित्रण है। और उस समय दिखाई देने वाला तारा उस नीलाई खो रहे अनन्त आकाश रूपी केश राशि में छुपा हुआ हृदय तक प्रभाव छोड़ने वाली संध्या रानी का अभिषेक कर रहा है।

उसके बाद उसे लता से उपमित करता है, जिसमें अलसता की-सी सुस्ती या क्लान्ति का भाव हो। कलियाँ कोमल होती हैं पर कवि संध्या-सुन्दरी को कोमल से भी कोमल मानता है-अर्थात कोमलता की कली। संध्या होते ही सभी दिन भर के कर्मों के बाद शाँति चाहते व थके-थके महसूस करते हैं इस तरह संध्या का शाँति व थकान से संबंध सहज मान्य है। इसलिए नीरवता को संध्या की सखी बताना सटीक उदाहरण है। संध्या-सुन्दरी इसी सखी के कंधे पर अपना हाथ रखकर आकाश मार्ग से धरती पर उतर रही है। वातावरण में चारों तरफ सिर्फ एक अव्यक्त शब्द है- "चुप-चुप-चुप।"

कवि संध्या-सुन्दरी को वात्सल्य भाव से पूर्ण एक साक्षी बताते हुए कहते हैं कि वह थके मनुष्यों की मादकता देकर अपने अंक में सुला लेती है और रात्रि की सघनता में परिवर्तित हो जाती है। संध्या से शुरू होकर कवि अर्द्धरात्रि तक अपनी

कल्पना को दौड़ाता है।

'संध्या-सुन्दरी' की भाषा की परिष्कृति और शब्द-चयन की की उपयुक्तता शैली को आकर्षण प्रदान करती है। सादृश्य मूलक अलंकारों की श्रृंखला से चित्रण में जहाँ विस्तार आया है वहीं 'उताल-तरंगाघात-प्रलय-घन-गर्जन-जलधि' जैसे पदों की सामासिकता से भाषा में अपूर्व कसाव आ गया है।

निराला के संध्या-वर्णन रूप में मानवीकरण और प्रभाव-चित्रण से अधिक सजीवता और गतिशीलता आयी है। कोमलता सुकुमारता तथा सौन्दर्य के प्रति अधिक झुकाव छायावाद की आरंभिक अवस्था के परिचायक हैं।